

विषय-सूची



| विषय | पृष्ठ |
|--|----------|
| १ भूमिका | १ से ९ |
| २ सौमसेन-त्रिवर्णाचारकी परीक्षा | १ से २३६ |
| प्राथमिक निवेदन | १ |
| ग्रंथका संग्रहत्व | ९ |
| अज्ञेय ग्रंथोंसे संग्रह | २९ |
| प्रतिष्ठादि-विरोध—भववन्निसेनप्रणीत आदिपुराणके विरुद्ध कथन ४९ | |
| ज्ञानार्णव ग्रंथके विरुद्ध कथन | ८७ |

दूसरे विरुद्ध कथन—(देव, पितर और ऋषियोंका घेरा, २ दन्तघावन करनेवाला पापी, ३ सेठ मलनेकी विलक्षण फलघोषणा, ४ रविवारके दिन ज्ञानादिकक्ष निषेध, ५ घरपर ठंडे जलसे ज्ञान न करनेकी धागा, ६-८ छात्रत्वका अद्भुत योग, ९ मरकाउभयमें वाद्य, १० ममकी विचित्र परिभाषा, ११ अघौतका अद्भुत लक्षण, १२ पत्तिके विलक्षण धर्म, १३ आसनकी अनोखी फलफलपना, १४ जुठन न छोड़नेका भयकर परिणाम, १५ देवताओंकी रोक याम, १६ एक ब्रह्ममें भोजन-भजनादिपर आपत्ति, १७ छुपारी खानेकी सजा, १८ जनेऊकी अजीब फरामात, १९ तिलक और वर्मके वैद्युत, २० सूतकी विदग्धना, २१ पिप्पलादि पूजन, २२ वधव्ययोग और अर्क-विवाह, २३ संकीर्णहृदयवाह्य, २४ ऋतुकालमें भोग न करनेनालमेंकी शक्ति, २५ अक्षी-कृता और अविद्याकार, २६ त्याग या तलाक, २७ स्त्री-पुनर्विवाह, २८ तर्पण धाद और पिण्डदान ।)

| | |
|--|-----|
| उपसंहार | २३४ |
| ३ धर्मपरीक्षा (श्वेताम्बरी)की परीक्षा | २३७ |
| ४ अकलंक-प्रतिष्ठापाठकी औचित्य | २५४ |
| ५ पूज्यपाद-उपासकाचारकी औचित्य | २६० |